HISTORY

B.A.PART-II (Subs)

Paper-II (Mugal period)

Unit-II, (Empire Expansion of Shershah)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 36

"शेरशाह का साम्राज्य विस्तार"

(Empire Expansion of Shershah)

अफगान जाति स्वभाव से क्रूर एवं स्वतंत्रता प्रेमी थे। अफगान जाति बाबर के द्वारा पानीपत एवं घाघरा के युद्ध में पराजित होने पर भी हिम्मत नहीं हारी। वे धैर्य पूर्वक अवसर एवं नेतृत्व का बाट जो रहे थे। जब संयोग से शेर खान जैसे योग्य सेनानायक का उदय हुआ तो देश में बिखरे हुए असंतुष्ट अफगान उसके झंडे के नीचे आ गए और शेर खा बिलग्राम विजय के बाद हुमायूं को निर्वासित कर पुनः भारतवर्ष में अफगान सत्ता स्थापित कर सूरी साम्राज्य की स्थापना करने में सफल हुआ। शेरशाह ने निम्न लिखित क्षेत्रों में अपने साम्राज्य का विस्तार किया। जो इस प्रकार हैं....

पंजाब एवं गक्खर की विजय:–

शेरशाह ने सम्राट बनने के बाद सर्वप्रथम पश्चिमोत्तर सीमा की ओर से अफगान को सुरक्षित रखने का प्रयास किया। इसके लिए उसने पंजाब एवं गक्खर क्षेत्र के लड़ाकू पहाड़ी जाति पर आक्रमण कर उन्हें अपने अधिकार क्षेत्र में ले लिया। इस प्रकार पश्चिमोत्तर सीमा के रक्षा का प्रश्न हल हो गया।

बंगाल विद्रोह का दमन:–

शेरशाह जब गक्खरों के साथ युद्ध में व्यस्त था तो बंगाल के उपगवर्नर खिज्र खां ने 1541 ई में शेरशाह के विरुद्ध बगावत कर दिया। शेरशाह ने बंगाल विद्रोह का दमन कर वहां अपना अमीन नियुक्त किया और 1542 ई में आगरा लौट आया।

मालवा विजय:–

Dr. Guddy Kumari (A.N.D College)

शेरशाह ने पुत्र की मृत्यु का बदला लेने और मालवा के रास्ते से संभावित मुगल राजपूत आक्रमण को रोकने के उद्देश्य से 1542 ई में मालवा पर आक्रमण कर दिया। शेरशाह ग्वालियर पर अधिकार कर सारंगपुर पहुंचा। वहां कादिर शाह शेरशाह के सैनिक शक्ति को देखकर आत्मसमर्पण कर दिया।

रणथंभोर की विजय:–

मालवा विजय के बाद शेरशाह थार के रास्ते रणथंभौर पर अधिकार कर लिया और अपने पुत्र आदिल शाह को वहां का हकिम नियुक्त किया।

रायसेन की विजय:–

शेरशाह धार्मिक उद्देश्य के साथ–साथ राजपूतों की शक्ति को रायसिन से समाप्त करने के उद्देश्य से रायसेन पर आक्रमण कर दिया और छह माह तक घेरा डाले रहा। वहां का शासक पूरणमल ने साहस एवं वीरता से शेरशाह के सैनिकों का सामना किया। अंत में शेरशाह ने छल कपट एवं विश्वासघात के द्वारा रायसेन पर अधिकार कर लिया और राजपूतों एवं उनके बीवी बच्चों को मौत के घाट उतार दिया।

सिंध एवं मुल्तान का विजय:–

रायसिन दुर्ग पर अधिकार करने के समय ही शेरशाह का सेनापति हैबत खां नियाजी ने 1543 ई में सिंधु मुल्तान पर विजय प्राप्त कर ली। इस विजय के बाद कंदहार का रास्ता बंद हो गया एवं बलुचियों का उपद्रव भी शांत हो गया।

राजपूताना की विजय:–

राजपूताना राजपूतों का गढ़ था। शेरशाह ने साम्राज्य की सुरक्षा की दृष्टि से राजपूताना को अपने अधिकार में ले लिया।

मारवाड़ एवं चित्तौड़ की विजय:–

शेरशाह ने 1544 ई में अपने आक्रमण का केंद्र बिंदु मारवाड़ की राजधानी जोधपुर पर आक्रमण कर वहां के शासक मालदेव को छल से पराजित कर दिया। यह विजय शेरशाह के लिए महंगा पड़ा क्योंकि इस युद्ध में हजारों अफगान सैनिक शहीद हो गए। मारवाड़ विजय के बाद शेरशाह चित्तौड़ की ओर बढ़ा। लेकिन चित्तौड़ का शासक उदयसिंह शेरशाह के आक्रमण से भयभीत होकर दुर्ग की चाभी चित्तौड़ से 24 मील पहले ही शेरशाह के पास भिजवा दिया। इस प्रकार चित्तौड़गढ़ में शेरशाह का अधिकार हो गया।

कालिंजर की विजय:–

शेरशाह ने कालिंजर के किले पर 1545 ई में आक्रमण कर दिया। किले पर आक्रमण का उद्देश्य यह था कि वहां के शासक कीरत सिंह के पास एक अद्वितीय नर्तकी थी जिसे शेरशाह प्राप्त करना चाहता था। नर्तकी की मृत्यु न हो इसके लिए शेरशाह ने किले में हाथगोले फेकवाए थे और वह खुद बारूद के ढेर के पास खड़ा रहा। संयोग से आग की चिंगारी बारूद के ढेर में लग गई और उसी समय शेरशाह की मृत्यु हो गई। लेकिन मृत्यु के पहले कालिंजर पर शेरशाह का अधिकार हो गया था।

शेरशाह का साम्राज्य विस्तार पूर्व में सोनार गांव से लेकर पश्चिम में गक्खर प्रदेश तक फैला था और उत्तर में कराकोरम पर्वत से लेकर दक्षिण में विंध्याचल पहाड़ी तक विस्तृत था।

Dr. Guddy kumari (A.N.D College)

शेरशाह की मृत्यु:–

शेरशाह की मृत्यु 22 मई 1545 ई में 60 वर्ष की उम्र में हुई। उसे बिहार के सासाराम के मकबरे में दफनाया गया।इस प्रकार एक महान सेनानायक, राजनीतिज्ञ एवं साम्राज्य निर्माता के जीवन का अंत हो गया। जो सहिष्णुता न्यायप्रियता एवं समान राजनीतिक अधिकार का सबसे बड़ा पृष्ठपोषण था।

शेरशाह मूल्यांकन:–

मध्यकालीन भारतीय इतिहास में शेरशाह का व्यक्तित्व आकर्षक ओजस्वी एवं ज्वलंत है। शेरशाह का व्यक्तित्व मानवीय गुणों से ओतप्रोत था। शेरशाह एक उच्च कोटि का सैनिक था। वह सेना को संगठित कर एक कुशल सेनानायक का गौरव प्राप्त कर चुका था। शेरशाह एक महान विजेता एवं दूरदर्शी था। एक कुशल शासक के सभी गुण उसमें मौजूद थे। शेरशाह के प्रशासन व्यवस्था का स्वरूप एकात्मक था। शेरशाह पहला मुसलमान शासक था जिसने जनकल्याण के आधार पर भारतीय साम्राज्य की स्थापना की। शेरशाह की धार्मिक नीति उदार थी। वह इस्लाम धर्म का अनुयाई था। लेकिन सभी धर्मों के प्रति सहिष्णु था।

आगे भी यह जारी है.....

!!!!!!!!!!धन्यवाद!!!!!!!!!!

Dr. Guddy kumari (A.N.D College)